कथकली

हाल ही में **के.के. गोपालकृष्णन** ने **"कथकली डांस थएिटर: ए वज़िुअल नैरेटवि ऑफ सेक्रेड इंडयिन माइम"** नामक एक आकर्षक पुस्तक का वमिोचन कयिा है।

- यह पुस्तक **ग्रीन रूम, कलाकारों के संघर्ष और मेकअप के लंबे घंटों** के दौरान बने अनूठे बंधनों पर ध्यान केंद्रति करते हुए**कथकली की दुनयिा में पर्दे के पीछे की झलक पेश करती है।**

कथकली:

- **उत्पत्ति और इतहिास:**
  - **कथकली का उदय 17वीं शताब्दी में त्रावणकोर (वर्तमान केरल) में हुआ था।**
    - इस कला रूप को **प्रारंभ में मंदरि परसिर में प्रदर्शति** कयिा जाता था और बाद में इसने **शाही दरबारों में लोकप्रयिता हासलि** की।
  - कथकली **ऋषि भरत** द्वारा लखिति **नृत्य पर प्राचीन ग्रंथ नाट्य शास्त्र** पर आधारति है।
    - हालाँकि कथकली **हाथों की मुद्राओं की व्याख्या के लयि ग्रंथ हस्तलक्षण दीपकिा पर आधारति** है, जो एक अन्य शास्त्रीय पाठ है।
  - 20वीं शताब्दी की शुरुआत में **कथकली संकट में थी और वलिुप्त होने के कगार पर थी।**
    - प्रसदि्ध कवि **वल्लथथोल नारायण मेनन और मनक्कुलम मुकुंद राजा** ने कथकली के पुनरुद्धार हेतु शास्त्रीय कला रूपों के लयि उत्कृष्टता केंद्र **केरल कलामंडलम** स्थापति करने की पहल की।
- **नृत्य और संगीत:**
  - कथकली नृत्य, संगीत, भाव-भंगमिा और नाटक के तत्त्वों को जोड़ती है।
  - इसमें गति को अत्यधकि शैलीबद्ध कयिा जाता है और इसमें **जटलि चाल, लयबद्ध बोल तथा हाथों के वभिनि्न इशारों को मुद्रा कहा जाता है।**

- नर्तक **भावनाओं को व्यक्त करने और कहानियाँ सुनाने** के लिये अपने चेहरे के भावों का उपयोग करते हैं जिन्हें **रस** के रूप में जाना जाता है।
- **मणिप्रवालम,** मलयालम और संस्कृत का मिश्रण **कथकली गीतों में प्रयुक्त भाषा** है।
  - कथकली गीतों के पाठ को **अट्टाकथा** के नाम से जाना जाता है।
  - **चेंडा, मद्दलम, चेंगिला, इलत्तालम्** कथकली संगीत के साथ प्रयोग किये जाने वाले प्रमुख वाद्य यंत्र हैं।

- **श्रृंगार:**
  - चरित्र की प्रकृति के अनुसार कथकली श्रृंगार को पाँच प्रकारों में वर्गीकृत किया गया है।
    - **पच्चा (हरा):** कुलीन तथा वीर पात्र जैसे देवता, राजा और संत।
    - **कत्ती (चाकू):** वीरता या बहादुरी की धारियों के साथ नायक-विरोधी या खलनायक।
    - **ताढ़ी (दाढ़ी):** विभिन्न प्रकार की दाढ़ी विभिन्न प्रकार के वर्णों को दर्शाती है, **जैसे:**
      - वेल्लाताढ़ी (सफेद दाढ़ी): दिव्य या परोपकारी पात्र।
      - चुवन्ना ताढ़ी (लाल दाढ़ी): दुष्ट या राक्षसी पात्र।
      - करूत्ता ताढ़ी (काली दाढ़ी): वनवासी या शिकारी।
    - **करि (काला):** पात्र जो दुष्ट, क्रूर या विचित्र हैं, जैसे- राक्षस या चुड़ैल।
    - **मिनुक्क् (दीप्तिमान):** पात्र जो कोमल, गुणी या परिष्कृत होते हैं जैसे कि स्त्रियाँ और ऋषि-मुनि।
  - भारी आभूषण और हेडड्रेस के साथ वेशभूषा रंगीन और असाधारण है।

- **नव गतिविधि:**
  - **महिलाओं का समावेश:** परंपरागत रूप से केवल पुरुष अभिनेताओं द्वारा किया जाने वाला **कथकली में धीरे-धीरे स्त्री कलाकारों का प्रवेश शुरू हुआ** जिन्होंने इस कला रूप का प्रशिक्षण लिया और विभिन्न महत्त्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाईं।
  - **विषयों में नवीनता:** हिंदू महाकाव्यों और पुराणों की शास्त्रीय कहानियों के अलावा कथकली ने **शेक्सपियर के नाटकों**, सामाजिक मुद्दों, ऐतिहासिक घटनाओं तथा समकालीन विषयों जैसे अन्य स्रोतों से भी नए विषयों की खोज की है।

- **वर्तमान में दर्शकों हेतु कथकली की प्रासंगिकता:**
  - कथकली, कला का एक जटिल रूप होने के कारण **दर्शकों को इसे गहराई के साथ पूर्ण रूप से समझने के लिये इसकी सांकेतिक भाषा, मेकअप कोड और कहानियों से खुद को परिचित कराने** की आवश्यकता होती है।
  - इसके अलावा आधुनिक तकनीक की शुरुआत, जैसे कि माइक्रोफोन और बेहतर ध्वनिकी ने **कथकली संगीत के पुनरुत्थान एवं इसकी लोकप्रियता में योगदान** दिया है।

कथकली (केरल)

कथकली के स्रोत

- **रामानट्टम:** **रामायण** की घटनाओं का प्रस्तुतीकरण।
- **कृष्णाट्टम:** **महाभारत** की घटनाओं का प्रस्तुतीकरण।
- **नृत्य, संगीत** तथा **नाटक** का संयोजन।
- आमतौर पर **कथकली पुरुषों तथा युवा बालकों**, जो **पुरुष** तथा **स्त्री दोनों की भूमिका** निभा सकते हों, द्वारा किया जाने वाला प्रदर्शन है। महिलाएँ इसमें भाग नहीं लेती हैं।
- **कथकली गीतों की भाषा:** मणिप्रवलम (मलयालम और संस्कृत का मिश्रण)
- इसे **'पूर्व का गाथागीत'** भी कहा जाता है।
- **आँखों और भौहों की लय के माध्यम से रस के निरूपण** में उल्लेखनीय।
- **नवरस:** चेहरे के नौ महत्त्वपूर्ण भाव।
- नर्तक **राजाओं, देवताओं** तथा **राक्षसों** इत्यादि की भूमिका का निरूपण करते हैं।
- **अच्छाई** और **बुराई** के बीच शाश्वत संघर्ष का भव्य निरूपण।
- वर्ष 1930 में प्रसिद्ध **मलयाली कवि वी.एन.मेनन** द्वारा **मुकुंद राजा** के संरक्षण में इसका पुनरुत्थान किया गया।

परिधान

- चेहरे का सुपरिष्कृत श्रृंगार
- बड़ा घेरदार घाघरा (स्कर्ट)
- अलंकृत मुखौटे
- बड़ी टोपी (हेडगियर)

चेहरे पर प्रयुक्त विविध रंग अलग-अलग मानसिक स्थिति के परिचायक

- **हरा:** कुलीनता
- **काला:** दुष्टता
- **लाल धब्बे:** राजसी गौरव तथा बुराई का संयोजन
- **पीला:** संत और महिलाएँ
- **सफेद दाढ़ी:** उच्चतर चेतना तथा देवत्व
- **हाथों के हाव-भाव, चेहरे की अभिव्यक्ति तथा आँखों की हरकतें महत्त्वपूर्ण हैं।**

वाद्ययंत्र

- ढोल
- छेंद
- मद्दला

प्रसिद्ध प्रवर्तक

- गुरु कुंचू कुरुप, गोपी नाथ, कोट्टकल शिवरमन तथा रीता गांगुली आदि।

दृष्टि The Vision

UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न

प्रश्न. प्रसिद्ध सत्रिया नृत्य के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये: (2014)

1. सत्रिया संगीत, नृत्य और नाटक का एक संयोजन है।
2. यह असम के वैष्णवों की सदियों पुरानी जीवित परंपरा है।
3. यह तुलसीदास, कबीर और मीराबाई द्वारा रचित भक्ति गीतों के शास्त्रीय रागों एवं तालों पर आधारित है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 1 और 2
(c) केवल 2 और 3
(d) 1, 2 और 3

उत्तर: (b)

व्याख्या:

- सत्रिया असम का एक शास्त्रीय नृत्य है, जिसमें एकसरन परंपरा (यानी कृष्ण-केंद्रित वैष्णववाद पंथ) पर आधारित नृत्य-नाटक प्रदर्शन शामिल हैं, जो 15वीं शताब्दी के भक्ति संत श्रीमंत शंकरदेव द्वारा आयोजित किया गया था। **अतः कथन 1 सही है।**
- 15वीं शताब्दी में शंकरदेव और उनके प्रमुख शिष्य माधवदेव ने नाट्य शास्त्र (जो तांडव नृत्य एवं अभिनय तकनीकों का प्रतीक है) भागवत पुराण जैसे प्राचीन ग्रंथों का उपयोग करके नृत्य रूप को व्यवस्थित तथा निर्देशित किया, साथ ही कृष्ण के प्रति भावनात्मक भक्ति हेतु सामुदायिक धार्मिक कला के रूप में नाटक व अभिव्यंजक नृत्य (नृत्त एवं नृत्य) पेश किया। **अतः कथन 2 सही है।**
- इसके अलावा संगीत मुख्य रूप से 15वीं-16वीं शताब्दी में श्रीमंत शंकरदेव और माधवदेव द्वारा रचित बोरगीतों पर आधारित है, जो गीतात्मक गीतों का एक संग्रह है जो विशिष्ट रागों हेतु निर्धारित हैं लेकिन किसी भी ताल के लिये ज़रूरी नहीं हैं। **अतः कथन 3 सही नहीं है।**

अतः विकल्प (b) सही है।

स्रोत: द हिंदू

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/kathakali-2